CBSE

Model Answer Sheet 2014

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, दिल्ली
सीनियर स्कूल सर्टिफिकेट परीक्षा (कक्षा बारहवीं) ELECTIVE
परीक्षार्थी प्रवेश–पत्र के अनुसार भरे

विषय Subject : Hindi Elective (002)

परीक्षा का दिन एवं तिथि
Day & Date of the Examination : Thursday 13.03.2014

उत्तर देने का माध्यम
Medium of answering the paper : Hindi

प्रश्न पत्र के ऊपर लिखे कोड को दर्शाए
Write Code No . as written on the top of the Question paper : 29/3

अतिरिक्त उत्तर–पुस्तिका (ओं) की संख्या
No . of supplementary answer -book(s) used :

किसी शारीरिक अक्षमता से प्रभावित हो तो संबंधित वर्ग में ✓ का निशान लगाएं।
If physically challenged, tick the category

B	D	H	S	C

B = दृष्टिहीन, D = मूक एवं बधिर, H = शारीरिक रूप से विकलांग, S = स्पास्टिक, C = डिस्लेक्सिक
B= Blind, D=Deaf & Dumb, H=Physically Handicapped, S=Spastic, C=Dyslexic

क्या लेखन – लिपिक उपलब्ध करवाया गया : हां / नहीं
Whether writer provided : Yes / No — No

*एक खाने में एक अक्षर लिखें। नाम के प्रत्येक भाग के बीच एक खाना रिक्त छोड़ दें। यदि परीक्षार्थी का नाम 24 अक्षरों से अधिक है तो केवल नाम के प्रथम 24 अक्षर ही लिखें।
Each letter be written in one box and one box be left blank between each part of the name. In case Candidate's Name exceeds 24 letters, write first 24 letters.

कार्यालय उपयोग के लिए
Space for office use

002-[redacted]

सीनियर स्कूल सर्टिफिकेट परीक्षा (कक्षा बारहवीं) केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, दिल्ली

SENIOR SCHOOL CERTIFICATE EXAMINATION (CLASS XII) CENTRAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION, DELHI

प्रमाणित किया जाता है कि मैंने / हमने इस उत्तर–पुस्तिका का मूल्यांकन प्रश्न पत्र के समुचित सेट अनुसार और पूर्ण रूप से मूल्यांकन पद्धति के अनुसार किया है।

Certified that I/we have evaluated this answer book according to the correct set of question paper and strictly as per the marking scheme.

	संख्या No.	हस्ताक्षर Signature

उत्तर - 1

(क) शीर्षक - भारत और सांप्रदायिकता

(ख) जिन लेखों को हम पढ़ते हैं वे राजनीतिक तकाज़ों से लाभ-हानि का हिसाब लगाते हुए लिखे जाते हैं, इसलिए उनमें पक्षधरता भी होती है और पक्षधरता के अनुरूप अपर पक्ष के लिए व्यर्थता भी। हम इसे ~~भजनमंडली~~ के बीच का भजन कह सकते हैं।

(ग) सांप्रदायिकता अर्थात अपने संप्रदाय की हित-चिंता अच्छी बात है क्योंकि यह अपनी व्यक्तिगत क्षुद्रता से आगे बढ़ने वाला कदम है, इसके बिना मानव-मात्र की हित-चिंता, जो अभी तक मात्र एक ख्याल ही बना रहा है, की ओर कदम नहीं बढ़ाए जा सकते।

(घ) हमारे सरोकारों की रुकावट और परस्पर टकराव के कारण ऐसी पंगुता होता है जिसमें हमारी उन्नति और विकास तो रुक ही जाता है, साथ ही दूसरों की उन्नति और विकास भी रुक जाता है।

उत्तर - 1

(क) शीर्षक - भारत और सांप्रदायिकता

(ख) जिन लेखों को हम पढ़ते हैं वे राजनीतिक तकाजों से लाभ-हानि का हिसाब लगाते हुए लिखे जाते हैं, इसलिए उनमें पक्षधरता भी होती है और पक्षधरता के अनुरूप अपर पक्ष के लिए व्यर्थता भी। हम इसे ~~भजनमंडली~~ के बीच का भजन कह सकते हैं।

(ग) सांप्रदायिकता अर्थात अपने संप्रदाय की हित-चिंता अच्छी बात है क्योंकि यह अपनी व्यक्तिगत क्षुद्रता से आगे बढ़ने वाला कदम है, इसके बिना मानव-मात्र की हित-चिंता, जो अभी तक मात्र एक ख्याल ही बना रहा है, की ओर कदम नहीं बढ़ाए जा सकते।

(घ) हमारे सरोकारों की रुकावट और परस्पर टकराव के कारण ऐसी पंगुता होता है जिसमें हमारी उन्नति और विकास तो रुक ही जाता है, साथ ही दूसरों की उन्नति और विकास भी रुक जाता है।

(ङ) 'वंचित या अभावग्रस्त' समुदाय से तात्पर्य ऐसे समुदाय है जो सामुदायिक हित से वंचित है। अवसर की कमी और अस्तित्व की रक्षा के चलते इनसे टकराव की स्थिति पैदा होती है।

(च) भारतीय समाज का आर्थिक ताना-बाना ऐसा रहा है कि इसने सामाजिक अलगाव को विस्फोटक नहीं होने दिया। इसी कारण भारत में अभिजातीय सांप्रदायिक संगठनों को जन-समर्थन नहीं मिला।

(छ) 'संप्रदायों के भीतर भी संप्रदाय'- इसे लेखक ने समझाया है कि बाहरी एकरूपता के नीचे सभी समाजों में भीतरी दायरे में कई तरह के असंतोष बने रहते हैं।

(ज) उपसर्ग - सम
प्रत्यय - आ

(झ)(i) तकाजा - देशज
दायरा - देशज

(ii) असंतोष - तत्सम
समर्थन - तद्भव

उत्तर - 2

(क) गुलाब के फूल शहरी युवकों और असली - सरसों के फूल ग्रामीण युवकों के प्रतीक हैं।

(ख) संभ्रात वर्ग शहरी युवकों को गाँव नहीं जाने देता क्योंकि वे गाँव जाकर काम नहीं कर पाएंगे जिससे उनकी प्रशंसा नहीं होगी।

(ग) वे लोग गाँव में ऐसे युवकों का बसना उचित मानते हैं जो गाँव को खुशी दे सकें, उन्हें पढ़ाएं और उनकी चिकित्सा करें।

(घ) इस काव्यांश में गुलाब के फूल अर्थात् शहरी युवकों पर व्यंग्य किया गया है कि वे गाँव जाकर अपनी प्रशंसा नहीं करवा सकते।

(ङ) इस पंक्ति का भाव है कि हम दुआ करते हैं, गुलाब के फूल पर ऐसी मुसीबत कभी न आए जब उसे गाँव जाना पड़े।

उत्तर - 7

सियरि अगिनि ———————————— हम लाग।

प्रसंग → प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी हिंदी पाठ्यपुस्तक 'अंतरा भाग दो' में संकलित 'बारहमासा' नामक कविता से उद्धृत है। इसके रचयिता 'मलिक मुहम्मद जायसी' है। यह पद्य 'पद्मावत' के 'नागमती वियोग खंड' से लिया गया है। इसमें नागमती का पति राजा रत्नसेन उसे छोड़कर पद्मावती की खोज में चला जाता है और नागमती विरह की अग्नि में जलती रहती है।

व्याख्या → अगहन मास चल रहा है। इसमें दिन छोटे और रात बड़ी होती है। इस महीने में अधिक सर्दी होती है। सर्दी से बचने के लिए सब जगह आग जला रखी है जो नागमती के हृदय को भी जला रही है। नागमती कहती है कि यह आग धधक - धधक कर जल रही है और मेरे हृदय को जला रही है अर्थात पति से विछोह के विरह के कारण उसका हृदय जल रहा है। यह आग नागमती के दुख को दुगुना कर रही है। नागमती का शरीर जल कर राख बनता जा रहा है।

नागमती कौए और भँवरे को संबोधित करती हुई कहती है-

हे काग ! हे भँवरे ! मेरा ये संदेश मेरे पिया तक पहुँचा दो कि तुम्हारी पत्नी विरह की आग में जल रही है और उससे उत्पन्न धुआँ हमारे शरीर पर लगकर उसे काला कर रहा है।

भाव - सौंदर्य → भाव यह है कि नागमती विरह की अग्नि में जल रही है और कौए व भँवरे से संदेश ले जाने को कह रही है ताकि उसके पति उसके दुख के बारे में पता चल जाएँ।

विशेष → (i) भाषा सरल, सहज और भावानुकूल है।

(ii) अवधी भाषा का प्रयोग है।

(iii) वियोग - श्रृंगार रस है।

(iv) दोहा- चौपाई छंद प्रयुक्त हुआ है।

(v) तत्सम शब्दावली का प्रयोग है।

(vi) 'सुलगि सुलगि' में पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार है।

(vii) 'दुख दगध', 'जोबन जरम' में अनुप्रास अलंकार है।

(viii) शब्द चयन सटीक है।

8

उत्तर - 8

(ख) 'वसंत आया' कविता के आधार पर कवि ने मनुष्य की आधुनिक जीवन - शैली पर व्यंग्य किया है। उसने कहा कि आज का मनुष्य प्रकृति से दूर होता जा रहा है। वह प्रकृति में हो रहे बदलाव को नहीं जानता। आज का मनुष्य वर्ष में आई ~~व~~ ऋतुओं की पहचान नहीं कर पाता कि वह कौन - सी ऋतु है वसंत या शीत। आधुनिक मनुष्य सिर्फ कैलेंडरों के आधार ऋतु को जानते है पर वास्तविकता को नहीं पहचानते। जैसा कि इस कविता में कवि को कैलेंडर देखकर और दफ्तर की छुट्टी से पता चला कि अमुक दिन वसंत पंचमी है।

(ग) 'यह दीप अकेला' कविता का मूल भाव यह है कि हमें अकेले नहीं रहना चाहिए अर्थात सबसे पृथक होना नहीं चाहिए बल्कि सबके साथ रहना चाहिए। मनुष्य सर्वगुण सम्पन्न है, उसमें सारी शक्तियाँ विद्यमान है फिर भी वह कमजोर है। व्यष्टि को समष्टि के साथ रहना चाहिए। साथ रहने से उसकी शक्तियाँ कम नहीं होती और अधिक बढ़ जाती है और इससे समाज का भी विकास होता है।

उत्तर - 9

(क) कातर दिठि - - - - - - - - - - - - - - - - समान।

भाव - सौंदर्य → इन पंक्तियों का भाव यह है कि श्रीकृष्ण का गोकुल से मथुरा जाने के बाद राधा उनके विरह में तड़प रही है। ये पंक्तियां राधा की अवस्था को बताती है। राधा के नेत्र चौबीसों घंटे श्रीकृष्ण को इधर - उधर ढूंढते रहते हैं और न मिलने पर आँसू बहा देते हैं। कृष्ण के बिना राधा का शरीर दिन - प्रतिदिन क्षीण - क्षीण होकर टूटता जा रहा है जैसे चौदस का चाँद।

शिल्प - सौंदर्य → (i) ब्रजभाषा का प्रयोग हुआ है।

(ii) 'हेरि - हेरि' में पुनरूक्तिप्रकाश अलंकार है।

(iii) 'छन - छन' में पुनरूक्तिप्रकाश अलंकार है।

(iv) 'चौदसि - चाँद' में अनुप्रास अलंकार है।

(v) वियोग - श्रृंगार रस है।

(vi) मुक्तक छंद है।

(ख) इस पथ - - - - - - - - - - - - - - - - तेरा तर्पण।

भाव - सौंदर्य → कवि 'निराला' अपनी पुत्री सरोज की मृत्यु पर शोकाकुल मनाते हुए कहते हैं कि इस जन्म के तो सारे

कर्म भ्रष्ट हो गए है। 'निराला' अपनी पुत्री को संबोधित करते हुए कहता है - हे कन्ये! मैं अपने पिछले कर्मों का अर्पण करके तुम्हे तर्पण करता हूँ।
शिल्प - सौंदर्य → (i) खड़ी बोली का प्रयोग है।
(ii) शांत रस है।
(iii) पथ पर, से शतदल, कर्मों का, तेरा तर्पण में अनुप्रास अलंकार है।
(iv) के-से शतदल में उपमा अलंकार है।
(v) चौपाई - छंदों का प्रयोग है।
(vi) प्रसाद गुण है।

उतर -10

लड़की ने आज _ _ _ _ _ _ _ _ _ _ जाती है।
प्रसंग → प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'अंतरा भाग-2' में संकलित 'दुसरा देवदास' से लिया गया है। इसकी लेखिका 'ममता कालिया' है। इसमें संभव नाम के लड़के को देवदास का प्रतीक माना गया है।
व्याख्या → लड़की को संभव ने जब पहली बार देखा था तो उसने गुलाबी साड़ी पहन रखी थी परंतु आज गुलाबी

साड़ी के बजाए सफेद साड़ी पहन रखी थी। लाज या शर्म के कारण वह लड़की सफेद साड़ी में भी गुलाबी लग रही थी। वह मंसा देवी पर गई और वहाँ जाकर ~~उसब~~ उसने एक चुनरी चढ़ाई और संकल्प लिया। संकल्प लेते ही जब दूसरी तरफ देखती है तो उसे वह लड़का दिखाई दे जाता है तब वह सोचती है कि मनोकामना की गाँठ भी अद्भुत होती है। अर्थात उसने गाँठ लगाई ही थी कि उसकी मनोकामना पूरी हो गई।

विशेष →(i) आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग हुआ है।

(ii) लक्षणा शब्द शक्ति का प्रयोग है।

(iii) प्रेम - कथा का वर्णन हुआ है।

(iv) तत्सम शब्दावली का प्रयोग है।

(v) चित्रात्मकता शैली का प्रयोग है।

उत्तर - ॥

(ख) शेर लघुकथा में आज के सामाजिक - राजनीतिक समाज पर व्यंग्य किया है। जिस प्रकार शेर कहानी में शेर ने सभी अन्य जानवरों को झूठ बोला था कि उसके अंदर रोजगार का दफतर है, घास का मैदान है उसी प्रकार

आज के नेता प्रजा से झूठे वायदे करते है और वोट बटोरते हैं। शेर सत्ता का प्रतीक है और वह प्रजा पर मनमाने ढंग से शासन करता है और उनके द्वारा विरोध करने पर क्रोधित हो जाता है उसी प्रकार राजनीतिक समाज में समाज के रखवाले जनता पर शासन अपने ढंग से चलाते है और उनके द्वारा विरोध किए जाने पर उनका शोषण करते है और सजा देते है।

(ग) लेखक ने कवि की तुलना प्रजापति से की है क्योंकि

(i) कवि और प्रजापति दोनो अपने -2 ढंग से काम करते है।

(ii) कवि अपने ढंग से कविता लिखता है और प्रजापति अपने ढंग से प्रजा पर शासन करता है।

(iii) कवि अपना श्रृंगार अलंकारों से करता है और प्रजापति हमेशा सोने - चांदी के जेवरों अलंकृत रहता है।

(iv) कवि किसी भी विषय पर कहानी लिख सकता है और किसी भी भाषा शैली का प्रयोग कर सकता है उसी प्रकार प्रजापति भी अपनी प्रजा पर शासन करने के लिए कैसा भी व्यवहार कर सकता है चाहे वह कठोर हो या नरम।

उत्तर - 12

भीष्म साहनी

जीवन - परिचय → भीष्म साहनी का जन्म सन् 1915 में रावलपिंडी (अब पाकिस्तान में) में हुआ। उनकी प्रारंभिक शिक्षा उर्दू, फारसी और अंग्रेजी में हुई। इसके पश्चात उच्च शिक्षा के लिए लाहौर चले गए। पंजाब विश्वविद्यालय से हिंदी में एम. ए. किया। तत्पश्चात लेखन कार्य शुरू किया। भीष्म साहनी ने स्वतंत्रता आंदोलन में भी बढ़-चढ़कर भाग लिया। उनके मन में महात्मा गाँधी से मिलने की अत्यंत चेष्टा थी।

प्रमुख रचनाएँ → भीष्म साहनी ने हिंदी जगत में अनेक रचनाएँ लिखी है। जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं- गाँधी, नेहरू और यासेर अराफात, तीसरी कसम, मर्यादा, पहली झलक आदि। अनेक रचनाओं पर उन्हें पुरस्कार भी प्राप्त हुए है।

भाषा - शैली → भीष्म साहनी अपनी रचनाओं मे आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग करते है। वे कभी-कभी मुहावरे और लोकोक्तियों का भी प्रयोग करते है। विवरणात्मक, विश्लेषणात्मक, कथात्मक शैली पर उनकी अच्छी पकड़ है।

मृत्यु → सन् 2003 में भीष्म साहनी इस संसार से विदा हुए।

उत्तर - 13

(क) जगधर के पूछे जाने पर सूरदास अपनी हानि को उससे छिपाता है और उससे झूठ बोलता है कि ये पैसे उसके नहीं है। सूरदास अपनी हानि को जगधर से इसलिए छिपाना चाहता था क्योंकि वह एक भिखारी था और भिखारी के पास इतने सारे पैसे अपमान की बात है। वह कमाता नहीं था और भीख मांगकर ही उसने इतने सारे पैसे जमा किए थे।

(ख) महीप 9-10 साल का लड़का था। वह घर छोड़कर भाग गया था क्योंकि वह अपने पिता को अपनी माता की आत्महत्या के लिए दोषी मानता था। महीप देवकुंड स्टॉप पर रहता था और यात्रियों को ऊँट की सवारी कराता था। महीप, रूपसिंह और शेखर के द्वारा अपने बारे में पूछे गए प्रश्नों को टाल देता था क्योंकि ~~वह~~ उनकी बातों से वह जान गया था कि वे उसके पिता के रिश्तेदार है।

उत्तर - 14

(i) दृष्टि - विकलांग मनुष्य को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। उनको संसार के दृश्य भी दिखाई नहीं देते। लोगों के द्वारा उनका मज़ाक उड़ाया जाता है। कई लोग उन्हें ठग लेते हैं और परेशान करते हैं। उन्हें अपने जीने के लिए दूसरों के सहारे पर निर्भर रहना पड़ता है।

(ii) दृष्टि - विकलांगता की विपत्ति को कम करने के लिए अनेक उपाय किए जाने चाहिए -

(क) उनके लिए अलग - से स्कूल, कॉलेज खोले जाएं ताकि वे भी पढ़ सकें और शोषित होने से बच सकें।

(ख) उन्हें सरकार द्वारा आरक्षण दिया जाने चाहिए ताकि वे दूसरों पर आश्रित न रहें।

(ग) उनका मज़ाक उड़ाने वाले को सज़ा दी जानी चाहिए।

(घ) विकलांग लोगों को स्वस्थ व्यक्ति की अपेक्षा अधिक सम्मान देना चाहिए।

(ङ) नेत्रदान करना चाहिए।

उत्तर - 15

"भूपसिंह ऐसा पर्वत - पुत्र है जो पग - पग पर आपदाओं से टक्कर लेता है, पर हार नहीं मानता।" इससे हमें भूपसिंह के चरित्र की विशेषताओं का पता चलता है जो इस प्रकार हैं -

(i) धैर्यशाली → भूपसिंह एक धैर्यशाली व्यक्ति है। वह विपत्तियों से हार नहीं मानता बल्कि उनका निडरता से सामना करता है। वह धैर्य धारण किए रहता है।

(ii) हार न मानने वाला → भूपसिंह में हार न मानने की प्रवृत्ति है। जब ~~शैला~~ भूकंप के कारण पर्वत गिर जाता है और उसके माता - पिता मर जाते हैं तब भी वह हार नहीं मानता।

(iii) पर्वत - पुत्र → भूपसिंह को पर्वत - पुत्र के नाम से जाना जाता है। माता - पिता के मरने के बाद वह पर्वत पर ही अपना घर बनाता है और वहाँ कृषि भी करता है। इस प्रकार वह पर्वत पर ही आश्रित हो जाता है।

(iv) साहसी व्यक्ति → वह कमजोर और दुर्बल व्यक्ति नहीं है बल्कि साहसी व्यक्ति है। वह अपनी हिम्मत और साहस के दम पर सारी विपदाओं का सामना करता है।

उत्तर - 6

(क) संपादकीय का अर्थ है संवाददाताओं द्वारा संकलित की गई जानकारियों में से अशुद्धियों को दूर करना और उन्हें पाठकों तक पहुँचाना।

(ख) पीत पत्रकारिता को पेज थ्री पत्रकारिता भी कहते हैं। इसे सनसनीखेज खबरों का खुलासा करने के लिए प्रयोग में लाया जाता है। यह किसी का भी चरित्र - हनन करने के लिए प्रयोग की जाती है।

(ग) स्टिंग ऑपरेशन को खोजपरक पत्रकारिता भी कहते हैं। इसका प्रयोग किसी भी ऐसे मुद्दे की खोज और छानबीन करने के लिए प्रयोग में लाया जाता है जिसे पहले छुपाने की कोशिश की गई हो। यह मुख्यत: अनियमितता, गड़बड़ी, भ्रष्टाचार को सामने लाता है।

(घ) (i) इलेक्ट्रोनिक माध्यम एक तीव्र माध्यम है।
(ii) यह जनसंचार का माध्यम है।
(iii) ये अत्यंत आकर्षित होते हैं।

(ड) संचार - माध्यमों में आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया जाना चाहिए।

उत्तर - 5

अनेकता में एकता

अनेकता में एकता भारतीय समाज के ताने - बाने में बुनी गई है। प्राचीनकाल में भारत अनेक छोटे - २ टुकड़ों में बँटा हुआ था। इसकी अनेक रियासतें थी। और उनके राजा सदा आपस में लड़ते रहते थे। जिसका फायदा अंग्रेजों ने 'फूट डालो और राज्य करो' की नीति से उठाया। तत्पश्चात भारतीय शासकों को यह बात समझ में आ गई कि एकता में बल है। तभी उन्होंने अंग्रेजो के सामने उदाहरण पेश किया कि भले हि हमारी रियासतें अलग - २ है परंतु हम सब एक देश के नागरिक हैं। और हम एक - दूसरे के साथ मिलकर रहते है विदेश की कोई भी ताकत हमें तोड़ नहीं सकते। इसी प्रकार भारत मे अनेकता में एकता का उदाहरण प्रस्तुत किया। तब से अब तक अनेकता में एकता भारतीय समाज के ताने - बाने में बुनी गई है। और आगे भी हम प्रयास करेंगे कि यह एकता ऐसे ही बनी रहे।

उत्तर – 4

सेवा में,

संपादक जी

हिन्दुस्तान टाइम्स

सोनीपत ।

विषय → कन्या-भ्रूण हत्या की समस्या

मान्यवर महोदय,

निवेदन यह है कि मैं अटेरना गाँव का निवासी हूँ। मैं आपके संपादन या अखबार के जरिए भारतीय सरकार और उसके साथ-2 जनता का भी ध्यान कन्या-भ्रूण हत्या की समस्या की ओर दिलाना चाहता हूँ। यह समस्या दिन-प्रतिदिन अपने पैर पसारती जा रही है। आज हिंदुस्तान का लिंग अनुपात अत्यंत बढ़ रहा है और सबसे ज्यादा लिंग अनुपात सोनीपत जिले का है। नई तकनीक के आ जाने से लोग गर्भ में ही शिशु का लिंग जान लेते हैं और लड़की होने पर उसकी गर्भ में ही मृत्यु करा देते है।

अत: आपसे नम्र निवेदन है कि आप इस समस्या की ओर ध्यान दें और जल्दी ही कन्या-भ्रूण हत्या

करने वालों के खिलाफ कोई सख्त कदम उठाए ताकि लिंग- अनुपात कम हो सके और लड़की अपना जीवन जी सके।

सधन्यवाद,

भवदीय,

राजकुमार

अटेरना

उत्तर -3

भारतीय किसान की समस्याएँ

भूमिका → आज हमारे देश में अनेक समस्याएँ पैदा हो रही है जैसे कि भ्रष्टाचार की समस्या, महंगाई की समस्या, बेरोजगारी की समस्या, बेकारी की समस्या, आतंकवाद की समस्या। परंतु इन सबसे बड़ी भारतीय किसानों की समस्या है जिसका प्रभाव भारतीय किसानों के साथ- २ देश के अन्य व्यक्तियों पर भी पड़ता है।

किसानों की समस्याएँ → भारतीय किसानों की अनेक समस्याएं हैं - (i) भारत ने भले ही विकास कर लिया है परंतु अब भी किस कृषि से संबंधित तकनीक उपलब्ध

करने में असफल है।

(ii) भारतीय किसानों पर सिंचाई के लिए वर्षा पर निर्भर रहना पड़ता है।

(iii) भारतीय किसान गरीब होने के कारण बीज का प्रबंध नहीं कर पाते।

(iv) किसानों को फसल का उचित मूल्य नहीं मिलता।

समस्याएँ उत्पन्न के कारण → भारतीय किसानों की समस्याएँ उत्पन्न होने के कारण हैं कि भारतीय सरकार ने किसानों को आरक्षण प्रदान नहीं किया है, भारतीय किसान व्यापारी की तुलना में अत्यधिक गरीब है जिस कारण वे उत्तम कोटि के बीज, खाद, उर्वरक आदि का प्रयोग नहीं कर पाते और उनकी फसल अच्छी नहीं होती। इसके अतिरिक्त खेतों में ट्यूबैलों की भी व्यवस्था नहीं है, उन्हें सिंचाई के लिए वर्षा पर निर्भर रहना पड़ता है। अधिक वर्षा होने पर फसल गल जाती है और कम वर्षा पड़ने के कारण फसल सूख जाती है। अत्यधिक गाँवों में स्वतंत्रता के बाद भी जुताई के लिए हल, बैल आदि का प्रयोग करना पड़ता है। जिसके कारण वह कम ही फसल उगा पाता है। भारतीय किसानों की

सबसे बड़ी समस्या है कि औद्योगिक विकास के लिए उनको खेतों को छीना जा रहा है जिसकी वजह से उनके पास कृषि करने के लिए भूमि कम हो रही है।

प्रभाव → इन समस्याओं के कारण ~~उनका~~ जीवन अस्त-व्यस्त हो गया है। वे अपने बच्चे के लिए दो वक्त की रोटी भी नहीं कमा पा रहे हैं। किसानों के साथ-2 इनका प्रभाव अन्य जन जीवन पर भी पड़ता है। इसकी वजह से महंगाई की समस्या उत्पन्न होती है। ~~अत~~ भूख रहने की ~~वजह~~ से बेरोजगारी बढ़ती है। जो देश के विकास में बाधा है।

रोकने के उपाय → भारतीय किसानों की समस्या को रोकने के लिए भारतीय ~~किसानों का~~ सरकार को अनेक कदम उठाने होंगे। जैसा कि

(i) कम कीमत पर उत्तम कोटि खाद, बीज, उर्वरक और कीटनाशक दवाइयाँ उपलब्ध कराएं।

(ii) खेतों में ट्यूबवैल लगाए।

(iii) कम ब्याज दर पर ऋण उपलब्ध कराएं।

(iv) उनकी फसल का अच्छा दाम उपलब्ध कराएं।

(v) कर से मुक्ति दी जाए।

(vi) व्यापारिक या वाणिज्यिक कृषि करने के लिए ट्रैक्टर आदि उपलब्ध कराएं।

उपसंहार → भारतीय किसानों की समस्या पूरे देश की समस्या है क्योंकि यदि किसान ही भूखा रहेगा तो अन्य जनता क्या खाएगी। इसलिए प्रत्येक मनुष्य को किसानों की समस्या को दूर करने की कोशिश करनी चाहिए और उनकी समस्या को अपनी समस्या मानकर उन्हें दूर करना चाहिए। यदि किसान खुश तो हम खुश। जय जवान जय किसान के नारे को अमर रखना चाहिए। जवान और किसान ही देश को बचा सकते हैं।